



साफ-सुथरी गंगा की नई उम्मीद

भारत डोगरा

वाराणसी गंगा किनारे का ऐसा शहर है जिसका इतिहास बहुत प्राचीन है, जिसकी संस्कृति बहुत समृद्ध है, और जो करोड़ों लोगों की श्रद्धा का केंद्र है। यहां गंगा नदी के घाट लगभग 7 कि.मी. तक फैले हुए हैं जहां किसी भी सामान्य दिन लगभग साठ हज़ार लोग श्रद्धा से स्नान करते हैं। विशेष त्यौहार-पर्व में तो इनकी संख्या बहुत बढ़ जाती है। इनमें से अनेक लोग गंगा जल का आचमन भी करते हैं व अपने साथ दूर-दूर तक ले भी जाते हैं।

गंगा एक्शन प्लान बहुत अच्छे उद्देश्यों को लेकर शुरू हुआ था। कायदे से इसके प्रथम चरण में ही वाराणसी में गंगा के प्रदूषण की संभावना न्यूनतम हो जानी चाहिए थी पर हकीकत यह है कि यहां के पानी के नमूनों की जांच से पता चला है कि प्रदूषण खतरनाक स्थिति तक बना हुआ है। यह जांच संकटमोचन फाउण्डेशन की प्रयोगशाला में की गई थी, जिसे इस तरह की जांच में विशेषज्ञता हासिल है। वर्ष 1982 में स्थापना के बाद से संकटमोचन फाउण्डेशन व इसके अध्यक्ष प्रो. वीरभद्र मिश्र ने निरंतर इस ओर ध्यान दिलाया है कि गंगा एक्शन प्लान के सराहनीय व महत्वपूर्ण उद्देश्य पूरे क्यों नहीं हो रहे हैं व इसके लिए कौन-से कारण जिम्मेदार हैं। अनेक नाले अपनी गंदगी बिना उपचार के ही गंगा में फेंकते रहे हैं। उपचार का स्तर भी ठीक नहीं था। पूरी प्रक्रिया को बिजली पर बहुत अधिक निर्भर बना दिया गया था व बिजली प्रायः उपलब्ध नहीं होती थी। बिजली न मिलने पर या बाढ़ की स्थिति में पंप चलते नहीं थे व गंदगी को ऐसे ही गंगा में बहा दिया जाता था।

संकटमोचन फाउण्डेशन ने इन गंभीर समस्याओं की ओर ध्यान दिलाने के अलावा एक वैकल्पिक योजना भी

प्रस्तुत की थी। इस वैकल्पिक योजना में उन गलतियों व समस्याओं को दूर रखा गया है जिनके कारण पहले सफलता नहीं मिल सकी थी। इस वैकल्पिक योजना को वाराणसी नगर निगम ने तो पहले ही मंजूर कर लिया था, अब भारत सरकार ने भी मंजूर कर लिया है। अतः उम्मीद है कि गंगा में प्रदूषण कम करने में सफलता निकट भविष्य में मिल सकेगी।

इस वैकल्पिक योजना की पहली विशेषता तो यह है कि मलजल व गंदा पानी गंगा की ओर ले जाने वाले सारे नालों का गंगा में प्रवेश पूरी तरह रोक दिया जाएगा। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि मलजल व गंदे पानी को पंप द्वारा लिफ्ट करके उपचार संयंत्र की ओर ले जाने की बजाय इसे गुरुत्व बल से एक पाइप लाइन में एकत्र कर शहर व घाटों से दूर बने उपचार संयंत्र तक ले जाया जाएगा। उपचार संयंत्र के लिए ऐसी ज़मीन चुनी गई है जहां कोई खेती नहीं होती है, न ही कोई रहता है। उपचार में प्राकृतिक प्रक्रियाओं से सफाई को अधिक महत्व दिया जाएगा। इस तकनीक में गंदे पानी को चार तालाबों से गुजारा जाएगा जिससे उसकी सिलसिलेवार सफाई होगी। अंत में वह इस स्थिति में आ जाएगा कि उसका उपयोग सिंचाई के लिए हो सके। इस तकनीक में अवशेष स्लज की मात्रा भी न्यूनतम रह जाती है। हालांकि यह तकनीक अमेरिका में विकसित की गई है मगर इसे वाराणसी की स्थितियों के अनुकूल ढालने का विशेष प्रयास किया गया है।

यह सच है कि सभी स्थानों को अपनी स्थिति के अनुकूल तकनीक चुननी होगी, पर वाराणसी के लिए तैयार की गई इस योजना की कुछ विशेषताएं ऐसी हैं कि अन्य स्थानों में नदी प्रदूषण कम करने के प्रयास भी इससे बहुत कुछ सीख सकते हैं। (स्रोत फीचर्स)